रिश्ता नाता जोड़ने की फज़ीलत

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि खसअम कबीले के एक व्यक्ति का बयान है कि मैं अपने कुछ साथियों के साथ पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और मैंने कहा, क्या आप का दावा है कि आप अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया हाँ! मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! कौन सा कर्म अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह पर ईमान। मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! फिर कौन सा कर्म? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता जोड़ना। मैंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! फिर कौन सा कर्म? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी का हुकम देना और बुराई से रोकना।

अल्लाह तआला ने दुनिया व आखिरत में कामयाबी के लिये जो सिद्धांत और नियम बनाया है उसका नाम इस्लाम है और हम इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि दुनिया व आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) में कामयाब होने और रब की खुशी हासिल करने के लिये दो अहम और बुनियादी चीज़ों का वाहक होना ज़रूरी है। एक अल्लाह की इबादत जो हमारे पैदा किया जाने का मकसद है और दूसरा नैतिकता। नैतिकता में रिश्ता नाता जोड़ने का स्थान सबसे ज़्यादा ऊंचा है और इसमें भी मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करना, इसके बाद बन्दों के अधिकारों में रिश्तेदारों का स्थान सबसे ज़्यादा ऊंचा है। इसी लिये कुरआन और हदीस में रिश्ते नातेदारों के साथ रिश्ता जोड़े रखने और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने की बड़ी ताकीद आई है और बड़ा पुण्य का काम करार दिया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''और रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफिरों का हक़ अदा करते रहो'' (सूरे बनी इस्राईल-२६)

दूसरी जगह कुरआन में फरमायाः ''और अल्लाह ने जिन चीज़ों के जोड़ने का हुक्म दिया है वह उसे जोड़ते हैं''

हदीसों में रिश्ता नाता जोड़ने वालों को शुभसूचना सुनाई गई है। एक अवसर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दुआ के सिवा तकदीर को कोई चीज़ नहीं टाल सकती और उमर में नेकी के सिवा कोई चीज़ बढ़ोतरी नहीं कर सकती। यहां नेकी का तात्पर्य रिश्ता नाता जोड़ना है और इससे बड़ी बात क्या होगी कि रिश्ता नाता जोड़ना अल्लाह के रहमत को वाजिब (अनिवार्य) कर देती है।

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रहिम (रिश्ता नाता) अर्श से लटका हुआ है कहता है कि जो मुझे मिलाए गा अल्लाह उसको अपनी रहमत से मिलाएगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह उसको अपनी रहमत से काटेगा अर्थात अपनी रहमत से वंचित कर देगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स को यह बात पसन्द हो कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी हो और उसकी उमर लम्बी हो तो यह रिश्ता नाता जोड़े रखे। एक और हदीस में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम अपना नसब (परिवारिक वंश) को मालूम करो ताकि अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाता जोड़ सको। रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाते जोड़े रखने के बड़े फायदे हैं इससे घर वालों के बीच मुहब्बत होती है। माल में बढ़ोतरी होती है। रिश्ता नाता जोड़ना एक मुसलमान और इन्सान की विशिष्ट पहचान है जो उसे लोगों में प्रमुख बनाती है यही वजह है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम के यहां रिश्ता नाता जोड़ने का बड़ा एहसास था। अल्लाह तआला से दुआ है कि हम तमाम लोगों को सहीह अर्थों में एक दूसरे के अधिकारों को समझने और इस पर अमल करने की क्षमता प्रदान करे।

मासिक

इसलाहे समाज

फरवरी 2023 वर्ष 34 अंक 2

शाबानुल मुअज़्ज़म 1444 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. रिश्ता नाता जोड़ने की फ़ज़ीलत 2
2. अपनी छवि बदल सकते हैं 4
3. रोज़े के अहकाम और मसाइल 5
4. रोज़े और रमज़ान की फ़ज़ीलत 7
5. रमज़ान का महीना इबादतों का महीना है 10
6. रमज़ान की खूबियाँ 14
7. शअ़बान महीने के अहकाम 16
8. दुनिया की हक़ीक़त 18
9. व्यापार 20
10. विवाह की प्रेरणा 23
11. अपील 27
12. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

अपनी छवि बदल सकते हैं

नौशाद अहमद

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा की गई है कि तुम नेक बातों का हुक्म करते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो'' (सूरे आले इमरान-११०)

मोमिन का मूल और बुनियादी काम यह है कि वह संसार के सभी लोगों के लिये लाभकारी और शुभचिंतक हो, और यह उसी सूरत में संभव है जब उसके अन्दर यह आभास और मनोबल पैदा हो जाये कि वह इस दुनिया में दूसरों की भलाई के लिये आया है और उसके पालनहार ने उसके एक खास मकसद के लिये इस दुनिया में भेजा है। अल्लाह की तरफ लोगों को बुलाना उसके आदेशों के बारे में लोगों को बाखबर करना एक महत्पूर्ण काम है लेकिन वक़्त गुज़रने के साथ हमारे अन्दर से इस ज़िम्मेदारी का एहसास खतम हो गया है और हम लोग अपने इस दायित्व को छोड़ कर दूसरे कामों में इतना व्यस्त हो गये हैं कि इस तरफ ज़्यादातर लोगों का ध्यान ही नहीं जाता, इस का अंजाम हम सभी के सामने है।

दावत का यह काम लोगों से हमदर्दी और मुहब्बत से संबद्ध है जब तक हमारे अन्दर लोगों के लिये हमदर्दी और मुहब्बत की भावना पैदा नहीं होगी, हम उस मक़सद को नहीं पा सकते और न ही खैर उम्मत (बेहतरीन समुदाय) कहलाने के हक़दार बन सकते जब तक कि यह विशेषता और आभास हमारे अन्दर न पैदा हो जाये।

इस वक़्त इस्लाम और मुसलमानों की जो छवि बना दी गयी है वह हमारे लिये किसी चुनौती से कम नहीं है। इस वक़्त हमारे लिये अपने इमेज को बेहतर बनाने की भी एक समस्या है, हम इस्लाम की शिक्षाओं का व्यवहारिक आदर्श पेश करके इस्लाम की तालीमात को अन्य लोगों तक पहुंचा भी सकते हैं और अपनी इमेज को भी बेहतर कर सकते हैं शर्त यह है कि हम पवित्र कुरआन की उपयुर्क्त आयतों का व्यवहारिक आदर्श बन जाएं।

हमारे कुछ कर्म जाने अंजाने में हमारी छवि को प्रभावित कर रहे हैं, हमारी बदनामी का कारण बन रहे हैं। शिक्षा के तईं जागरूकता पैदा हुई है लेकिन यह पर्याप्त और संतुष्टजनक नहीं है। आज भी मुस्लिम गली मोहल्लों में ऐसे बच्चों को देखा जा सकता है जो स्कूल तो जाते हैं लेकिन घर पर पढ़ाई न करके गालियों के चौक चौराहों और अन्य स्थानों पर जमघठा लगाकर अपना वक़्त बर्बाद करते नज़र आ रहे हैं, यह अपना निजी हानि तो है ही, इसके साथ अन्य लोग हमारे इस व्यवहार को हमारे धर्म से जोड़ कर देख रहे हैं जब कि यह केवल हमारी लापरवाही का नतीजा है, हमें अपनी इस छवि को बदलना होगा। ऐसे बच्चों का उचित प्रशिक्षण भी नेकी का काम है यह महज़ एक मिसाल है बाक़ी कुछ लोग दूसरों को बदनाम करने का बहाना ढूढ़ते रहते हैं जब कि हम अपने व्यवहार कर्मों से इस क्षवि पर अंकुश लगा सकते हैं।

रोज़े के अहकाम और मसाइल

शैखुल हदीस मौलाना
उबैदुल्लाह रहमानी रह०

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सान जो भी कर्म करता है उस कर्म का बदला उसे दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक मिलता है लेकिन रोज़ा के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि रोजा खालिस मेरे लिये होता है इसलिये मैं ही इस का बदला दूंगा रोज़ा रखने वाला केवल मेरे लिये अपनी जिन्सी खुवाहिशात और मेरे लिये खाने पीने को छोड़ता है। रोज़ा रखने वाले के लिये खुशी के दो अवसर हैं एक खुशी उसे इफतार के वक्त हासिल होती है और दूसरी खुशी उसे उस वक्त प्राप्त होगी जब वह अपने पालनहार से मुलाकात करेगा और रोज़ा रखने वाले के मुंह की बू अल्लाह के यहां कस्तूरी खुश्बू से ज्यादा प्रिय है। (बुखारी १८४४ मुस्लिम १६४) हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि रमज़ान के महीने में उमरा करना हज करने के बराबर है। (सहीह बुखारी, १७८२, मुस्लिम १२५६)

सेहरी देर से खाना सुन्नत है। एक रिवायत में है कि आप स०अ०व० फज्र की नमाज़ और सेहरी खाने में इतना गेप रखते थे कि जिस में आदमी पचास आयत पढ़ सके (बुखारी)

सूरज डूबने का यकीन होते ही इफतार में जल्दी करना मुस्तहब है। आप स०अ०व० ने फरमाया लोग उस वक्त तक खैर पर रहेंगे जब तक इफतार में जल्दी करेंगे। (बुखारी, मुस्लिम) आप स०अ०व० ने फरमाया रमजान के महीने में जिक्रे इलाही करने वाले की मगफिरत कर दी जाती है। एक रिवायत में है कि तीन लोगों अर्थात रोजेदार, इन्साफ करने वाले और मजलूम की दुआ रदद नहीं की जाती। (इब्ने खुजैमा, इब्ने हिब्बान)

क्या करने से रोज़ा नहीं टूटता

''१. गीली या सूखी मिस्वाक दिन के किसी भी हिस्से में करना

२. सुर्मा लगाना और आंख में दवा डालना

३. सर या बदन में तेल मलना

४. खुश्बू लगाना

५. सर पर भीगा कपड़ा रखना

७. इंजेक्शन लगवाना जो कुव्वत और खाने का काम न दे।

८. जरूरत पड़ने पर खाने का नमक चेक करके तुरन्त थूक देना या कुल्ली करना

९. सुबहे सादिक के बाद नहाना

१०. मर्द का बीवी को चुंबन लेना व लिपटना, शर्त है कि मर्द अपने को कन्ट्रोल में रख सकता हो और संभोग का डर न हो।

११. रात में एहतलाम हो जाना

१२. औरत को देख कर इन्जाल अर्थात वीर्य का बाहर आ जाना।

१३. खुद से उलटी हो जाना चाहे थोड़ा हो या ज्यादा

१४. नाक में पानी डालना बगैर मुबालगा

१६. नाक के रेंठ का अन्दर ही अन्दर हलक के रास्ते अन्दर चले जाना

१७. कुल्ली करना शर्त यह है कि मुबालगा न करे।

१८. कुल्ली करने के बाद मुंह में पानी की तरी का थूक के साथ अन्दर चले जाना।

१९. मक्खी का हलक में चले जाना।

२०. इस्तिन्शाक-नाक में (पानी चढ़ाना बिना मुबालगा) की सूरत में बगैर इरादा पानी का नाक से हलक के अन्दर उतर जाना।

२१. मुंह में जमा थूक पी

जाना मगर ऐसा न करना बेहतर है।

२२. मसूढ़े के खून का थूक के साथ अन्दर चला जाना।

२३. कुल्ली करते वक्त बिना इरादा पानी का हलक़ में उतर जाना।

२४. शर्मगाह में पिचकारी के ज़रिये दवा वगैरह दाखिल करना

२५. औरत से चुंबन व लिपटने की सूरत में इन्जाल हो जाना

२६. भूल कर खा पी लेना।

२७. गर्द गुबार धुवां या आटा उड़ कर हलक में चले जाना। २८. मोछों में तेल लगाना

२९. कान में तेल या पानी डालना और सलाई डालना

३०. दांत में अटके हुये गोश्त या खाने का टुकड़ा जो महसूस न हो और विखर कर हलक के अन्दर चला जाये।

रोज़ा टूट जाता है।

१. जान बूझ कर खाना पीना थोड़ा हो या ज्यादा

२. जान बूझकर संभोग करना

३. जान बूझकर उलटी करना थोड़ी हो या ज्यादा

४. हुक्का, बीड़ी सिग्रेट पीना,

५. पान खाना

७. खाना पीना या संभोग करना रात समझ कर या यह ख्याल करके कि सूरज डूब गया है जबकि सुबह हो चुकी थी या सूरज डूबा नहीं था।

८. मुंह के अलावा किसी जख्म के रास्ते से नलकी के माध्यम से खाना या दवा अन्दर पहुंचाना

इन सब हालतों में टूटे हुये रोज़ों को पूरा करना जरूरी है और जान बूझ कर बीवी से संभोग कर लेने पर कज़ा के साथ कफ्फारा देना भी ज़रूरी है।

मासिक इसलाहे समाज

स्वामित्व का एलान

फार्म न० 4 रूल न० 1

नाम पत्रिका	:	इसलाहे समाज
अवधिकता	:	मासिक
प्रकाशन स्थान	:	अहले हदीस मंजिल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
मुद्रक व प्रकाशक	:	मुहम्मद इरफान शाकिर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सी-125/2 अबुल फज़ल इन्कलेव-2 शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली25
सम्पादक	:	एहसानुल हक
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	अहले हदीस मंजिल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
स्वामित्व	:	मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द 4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

मैं मुहम्मद इरफान शाकिर, मुद्रक व प्रकाशक पुष्टि करता हूं कि उपर्युक्त बातें मेरे ज्ञान के अनुसार सहीह हैं।

हस्ताक्षर

प्रकाशक एवं मुद्रक

मुहम्मद इरफान शाकिर

रोज़े और रमज़ान की फ़ज़ीलत

शैख मुहम्मद बिन सालेह उसैमीन

रोज़ा इबादत में से एक महान (अज़ीम) इबादत है जिसकी फज़ीलत और अहमियत को कुर्आन व हदीस में विस्तार से बयान किया गया है।

अल्लाह तआला फरमाता है "ऐ मोमिनों! तुम पर रोज़ा फर्ज़ किया गया है जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फर्ज़ था ताकि तुम मुत्तक़ी (परहेज़गार) बन जाओ।"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने ईमान व इख्लास से रम्ज़ान का रोज़ा रखा उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे। (बुख़ारी,मुस्लिम)

एक हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला फरमाता है कि इंसान के हर कर्म का बदला (सवाब) दस से सात गुना तक हो सकता है मगर रोज़ा चूंकि मेरे लिये है इसकी उज्रत (सवाब) मैं खुद ही दूंगा बन्दे ने मेरे लिये अपना खाना पीना और शहवते नफ्सानी को छोड़ दिया है (मुस्लिम)

अल्लाह तआला ने सारे आमाल में केवल रोज़े का अमल ही अपने लिए मख्सूस किया है क्योंकि यह राज़ अल्लाह और उसके बन्दे तक सीमित (महदूद) है। कभी कभार इंसान एक खाली जगह पर होता है और खाना पीना, खुवाहिशाते नफ्सानी की पूर्ति कर सकता है लेकिन रोज़े के सवाब और अल्लाह के डर से इन चीज़ों के क़रीब नहीं जाता। इसी इख्लास और नेक नियती की क़द्र करते हुये इस अमल को अपनी जात के लिये मुखतस (विशिष्ठ) किया है जिस का लाभ क़यामत के दिन प्रकट होगा जैसा कि सुफ्यान बिन उऐना फरमाते हैं क्यामत के दिन जब अल्लाह बन्दे का हिसाब करेगा तो उस के सारे बुरे आमाल के बदले खत्म होने के बाद जब रोज़ा बाकी बचेगा अल्लाह बाकी बुराई की भरपाई का खुद जामिन होकर रोजे के बदले उस शख्स को स्वर्ग में दाखिल कर देगा।

अल्लाह ने तमाम नेक आमाल के बदले का इजाफा गिन्ती में किया है लेकिन रोज़े में ऐसा नहीं है यह इस लिये कि एक रोज़ेदार अल्लाह का अनुसरण (एताअत) करते हुये उसकी हराम करार दी गयी चीजों से रूक जाता है और कठिनाइयों पर सब्र करता है और सब्र करने वालों के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है "सब्र करने वालों को बिना हिसाब पूरी उज्रत दी जाये गी" (सूरे जुमर)

रोज़ा ढ़ाल है जो रोज़ेदार को हर फहश बातों से बचाता है। रोज़े की हालत में बुरी बातों से रोका गया है रोजे के बारे में कहा गया है कि यह नरक से बचाव का माध्यम है। हदीस में है कि रोज़ा ढाल है, बंदा इसके द्वारा अपने को नरक की आग से बचाता है। (मुस्नद अहमद)

रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह तआला के नजदीक मुश्क से भी अधिक महबूब होना रोजे की महानता और फजीलत की दलील है।

कुरआन की तरह रोज़ा भी क्यामत के दिन रोजेदार के लिये सिफारिशी होगा। अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया रोज़ा और कुर्आन कयामत के दिन बन्दे की सिफारिश करेंगे। रोज़ा कहेगा ऐ मेरे रब! इसको मैं ने खाने पीने हमबिस्तरी (औरत से मिलने) से रोक दिया था इसके बारे में मेरी सिफारिश स्वीकार फरमा दोनों की सिफारिश कुबूल की जायेगी। (मुस्नद अहमद)

पांच नमाजें एक जुमा दूसरे जुमा तक के लिये और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक के लिये दरमियानी मुद्दत के गुनाहों का कफ्फारा (प्रायश्चित) हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों (बड़े गुनाहों) से बचा जाये। (सहीह मुस्लिम)

''जिसने ईमान रखते हुये सवाब की नियत से रमज़ान के रोज़े रखे उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जाते हैं'' (सहीह बुख़ारी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''मैंने देखा कि मेरी उम्मत का एक आदमी प्यास की शिद्दत से कांप रहा है जब भी हौज पर आता है रोक दिया जाता है रमज़ान के रोज़े आये और उसे पानी पिला कर सैराब कर दिया'' (तब्रानी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जब रमज़ान की पहली रात आती है तो शैतान और सर्कश जिन जकड़ दिये जाते हैं, नरक के दरवाज़ बन्द कर दिये जाते हैं एक भी दरवाज़ा खुला नहीं रहता और स्वर्ग के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं एक भी दरवाज़ा बन्द नहीं रहता और एक पुकारने वाला आवाज़ देता है। ऐ नेकियों के इच्छुक! आगे बढ़ और ऐ बुराइयों के इच्छुक! कम कर। और अल्लाह तआला बहुत से बन्दों को नरक से आज़ाद कर देता है और पूरे महीने में हर रात इसी तरह होता है''। (तिर्मिज़ी)

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहाबा रजि अल्लाहु तआला अन्हुम ने अफज़ल सदक़ा के बारे में पूछा तो आपने फरमाया ''सबसे अफज़ल सदक़ा रमज़ान में दिया गया सदक़ा है'' (तिर्मिज़ी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जो शख्स किसी रोज़ेदार को रोज़ा इफ्तार कराता है उसे रोज़ेदार के बराबर ही सवाब मिलता है जबकि रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी नहीं आयेगी''। (तिर्मिज़ी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जिसने किसी रोज़ेदार को हलाल खाने या पानी से रोजा इफ्तार कराया फरिश्ते रमज़ान में उसके लिये रहमत की दुआ करते हैं और जिब्रील शबे क़द्र को उसके लिये रहमत की दुआ करते हैं'' (तब्रानी)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब लोगों से ज़्यादा सखी थे और उनकी सखावत का सबसे ज़्यादा इज़्हार रमज़ान के महीने में होता था जब जिब्रील आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाकात करते थे। (सहीह बुखारी)

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जो शख्स ईमान रखते हुए सवाब की नियत से रमज़ान शरीफ में क्याम करेगा उसके पिछले गुनाह माफ हो जायें गे। (सहीह बुखरी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद भी रमज़ान की रातों में इबादत करते थे विशेष रूप से आखिरी दस रातों में घर वालों को भी जगाते थे और हर छोटा बड़ा जो नमाज़ पढ़ सकता हो उसे जगाते थे (सहीह बुख़ारी)

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम रमज़ान के महीने में कुरआन की तिलावत कस्रत (ज़्यादा से ज़्यादा) करते थे और जिब्रील कुरआन करीम का दौर करते थे (सहीह बुख़ारी)

निम्नलिखित चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है।

१. औरत से हमबिस्तरी से रोज़ेदार का रोज़ा टूट जाता है चाहे फर्ज रोजा हो या नफिल। अगर हमबिस्तरी रमज़ान के महीने में हुई है तो उसकी कज़ा (पूरा करने के) साथ कफ्फारा देना होगा या तो मोमिन गुलाम को आज़ाद कराये अगर इस की ताक़त न हो तो लगातार २ महीन का रोज़ेा रखे अगर रोज़ा न रख सके तो साठ मिस्कीनों को आधा किलो दस ग्राम अच्छा गेहूं दे जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस सहाबी को हुक्म दिया था जिसने रमज़ान में अपनी पतनी से हमबिस्तरी कर ली थी और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फतवा पूछा था। (बुख़ारी, मुस्लिम)

२. मनी को जान बूझकर निकालना, यह अमल चाहे बोसा लेने से हो या मुश्तज़नी से इस तरह की शहवत से बचे बगैर रोज़ा नहीं होगा जैसा कि हदीसे कुदसी है।

''मेरे बन्दे ने खाना पीना और ख्वाहिशात मेरे कारण छोड़ दिया है, (बुखारी)

अगर बोसा या छूने से मनी न निकले तो रोज़ा बाकी रहेगा। आइशा रजि अल्लाहु तआला अन्हा इस बारे में फरमाती हैं आप रोज़े की हालत में (कपड़े के ऊपर से) मुबाशिरत करते थे लेकिन आप अपनी नफसानी ख्वाहिशात पर ज़्यादा कुदरत रखते थे (बुख़ारी, मुस्लिम)

अगर बोसा से मनी निकल जाये या हमबिस्तरी की शंका हो तो रोज़ेदार के लिये बोसा आदि हराम है। लेकिन अगर सोचने से निकल जाये तो यह माफ है। रोज़ेदार का रोज़ा नहीं टूटे गा।

३. खाने पीने से भी रोज़ा टूट जाता है। कुरआन में है ''खाओ और पियो यहां तक कि तारीकी से सुबह की सफेदी नुमूदार हो जाये फिर रात तक रोज़ा मुकम्मल करो'' (सूरः बकरा)

खुश्बू सूंघने से रोज़ा नहीं टूटता है क्योंकि वह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो पेट में दाखिल हो सके।

४. रोज़ेदार की कम्ज़ोरी की वजह से खून चढ़ाया जाये तो इस से रोज़ा टूट जायेगा।

ताक़त देने वाली इंजेक्शन से भी रोज़ा टूट जाता है क्योंकि यह खाने पीने के दर्जे में आता है।

५. पोछना लगवाने से रोज़ा टूट जाता है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''गोदना लगवाने वाला और लगाने वाला दोनों अपना रोज़ा तोड़ दें'' (अहमद, अबू दाऊद)

६. जान बूझ कर उल्टी करने से भी रोज़ा टूट जाता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जिस पर उल्टी गालिब आ जाये तो उस को कज़ा नहीं करना पड़ेगा लेकिन जिसने जान बूझकर उल्टी की तो उसको उस दिन का रोज़ा बाद में रखना पड़ेगा'' (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

७. हैज और निफास आने से भी रोज़ा टूट जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''क्या औरत हैज के दिनों में नमाज़ और रोज़ा छोड़ नहीं देती''

रमज़ान का महीना इबादतों का महीना है

शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ रह०

इस मुबारक महीने में तमाम मुसलमानों को नफ्ली नमाज़ सोच विचार के साथ कुरआन की तिलावत, ज़्यादा तस्बीह तहमीद तक्बीर तौबा-इस्तिगफार और मसनून दुआओं को पढ़ते रहना चाहिए। भलाई का हुक्म देने, बुराई से लोगों को मना करने और अल्लाह की तरफ बुलाने की कोशिश करनी चाहिये। फकीरों और गरीबों के साथ महदर्दी, मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव सिला रहमी, पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक, बीमारों की देख-भाल और इस प्रकार के दूसरे भलाई के कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये, जैसा कि नबी करीम स० की हदीस में है कि:

अल्लाह तआला इस मुबारक महीने में भलाई के कामों में तुम्हारे एक दूसरे पर बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने को देखता है और फरिश्तों के सामने तुम पर गर्व करता है तुम अपने आप को उनके सामने बेहतर साबित करो। वह बहुत ही अभागा है जो इस महीने में अल्लाह की दया से वन्चित रहा।

आप स० से यह भी रिवायत है कि जो व्यक्ति भलाई के कामों में से कोई कार्य करता है तो गोया वह एक फरीज़ा अदा करता है। और जो इस महीने में एक फर्ज़ अदा करता है गोया वह सत्तर फर्ज़ अदा करता है।

आप स० का यह भी फर्मान है कि रमज़ान के महीने में उम्रा एक हज्ज के बराबर है।

या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''(रमज़ान के महीने में उम्रा) मेरे साथ हज्ज करने के बराबर है।

इस मुबारक महीने में अनेक प्रकार के भलाई के कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने और एक दूसरे से आगे बढ़ जाने के सिलसिले में अनगिन्त सहाबा के कौल मौजूद हैं।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें और तमाम मुसलमानों को हर उस काम के करने की तौफीक़ दे जिससे उसकी प्रसन्नता प्राप्त होती है। हमारे रोज़ों को स्वीकार करे, हमारी हालतों की इसलाह फरमाये, और हम सभी लोगों को गुमराही में डालने वाले फितनों से बचाये। और यह भी दुआ है कि वह तमाम मुस्लिम काइदों (रहनुमाओं) की इस्लाह करे और उन्हें हक़ पर इकटठा कर दे। वही इस योग्य है कि उससे यह दुआयें की जायें, और वही उन्हें स्वीकार करने की शक्ति रखता है।

रमज़ान के महीने में रोज़ा और नमाज़ से संबंधित अहम काम

मुसलमान भाइयो! निःसंदेह आप पर एक बड़ा ही मुबारक महीना आने वाला है, और वह महीना रमज़ान का महीना है। यह महीना, कियाम और तिलावत का महीना है, जहन्नम से आज़ादी और मग्फिरत का महीना है, सदक़ा व खैरात और भलाई का महीना है। अल्लाह तआला इस महीना में अपने बन्दों पर मुख्तलिफ करामतों की बख्शिश करता है, और अपने नेक बन्दों को इनामात से भी नवाज़ता है। यह एक ऐसा महीना है जिसमें रोज़े रखने को

अल्लाह तआला ने इस्लाम का एक रूक्न करार दिया है।

इसलिये नबी करीम स० ने इस माह में रोज़े रखे और लोगों को रोज़े रखने का हुक्म भी दिया और आप स० ने फरमायाः

जो ईमान और सवाब की आशा करते हुये रोज़ा रखेगा अल्लाह तआला उसके पिछले तमाम गुनाह माफ कर देगा। और जो ईमान व सवाब की उम्मीद करते हुये इस महीने में कियाम करेगा तो अल्लाह उसके तमाम पिछले गुनाह माफ कर देगा।

यह ऐसा महीना है जिसकी एक रात हज़ार रातों से बेहतर है, जो इसके खैर को न पाया निश्चय वह महरूम रहा, पस तुम भी इसका आदर करो, अल्लाह तआला तुम्हारी इस नेक निय्यत रोज़ा और क़ियामत में परेशानियां बर्दाश्त करने, भलाई में आगे बढ़ने और तमाम गुनाहों से तौबा करने के बदले तुम पर दया नाजिल करेगा।

और आपस में नसीहत और भलाई और तक्वा के कामों में एक दूसरे के मदद करने, और भलाई की तरफ दावत देने की कोशिश करते रहो, ताकि तुम अल्लाह के पुरस्कार से सम्मानित किये किये जाओ।

रोज़ा के बहुत से फ़ायदे हैं और इसमें बड़े गुण पोशीदा है। इन्हीं फाइदों में से यह है कि बुरे आचार और बुरे व्यवहार (जैसे तकब्बुर, किसी को हीन और नीचा समझना, या नाशुकरी करना) और बखीली व कंजूसी से मन को पाक साफ बनाना है, और अच्छे अख्लाक़ जैसे सब्र, नर्मी, एहसान करना, सखावत को अपनाना है। यहां तक कि अल्लाह उससे राज़ी हो और उसके नज़दीक वह बन्दा महबूब हो जाये।

रोज़े का एक बड़ा फाइदा यह भी है कि रोज़ा बन्दे को उसकी ज़ात, उसकी ज़रूरत, उसकी कमज़ोरी और सारे संसार के पर्वरदिगार के सामने उसकी मुहताजी को याद दिलाता है, उस पर अल्लाह के एहसान को याद दिलाता है उसे उसके निर्धन भाइयों की ज़रूरत भी याद दिलाता है। और यह बातें उसे इस बात की तरफ दावत देती हैं कि वह अल्लाह का शुक्र अदा करे, उसकी नेमतों को उसकी बन्दगी के लिये इस्तेमाल करे, और अपने ज़रूरतमन्द भाईयों की ज़रूरतें पूरी करे, और उनके साथ भलाई करे। अल्लाह तआला ने इन तमाम फाइदों की तरफ नीचे की आयत में इशारा किया है। अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

हे ईमान वालो हमने तुम्हारे ऊपर रोज़ा फर्ज़ किया जैसा कि तुम से पहले वालों पर फर्ज़ किया, ताकि तुम अल्लाह से डरो। (सुरे बकरा-१४३)

अल्लाह तआला ने यह बात स्पष्ट कर दी कि रोज़े को फर्ज़ करने का मक़्सद यह है कि हम अल्लाह से डरने वाले और बुराइयों से बचने वाले बन जायें। मालूम हुआ कि रोज़ा तक़्वा हासिल करने के लिये एक वसीला और ज़रीआ है। तक़्वा अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाकारी होने का नाम है, वह इस तरह कि अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन किया जाये और जिन कामों से मना किया है उनसे बचा जाये, और हर काम सिर्फ अल्लाह के लिए उससे सच्ची मुहब्बत की वजह से, उसकी जन्नत की उम्मीद में और उसकी यातना से डरते हुए किया जाये।

रोज़ा तक़्वा की शाखों में से एक बड़ी शाख और अल्लाह से नज़दीकी हासिल करने और

दीन-दुनिया के तमाम शोबों (विभागों) में तक़्वा की राह पर चलने का एक बड़ा ज़रीआ है। नीचे बयान की गयी हदीस में नबी करीम स० ने रोज़े के कुछ फाइदों की तरफ इशारा किया है। आप स० ने फरमायाः

हे जवानों की जमाअत! तुम में से जो खिलाने-पिलाने की ताकत रखता हो वह शादी कर ले। निश्चय इससे निगाह नीची रहती है और शर्मगाह की सुरक्षा होती है। और जो इसकी ताकत नहीं रखता वह रोज़े रखे, क्योंकि यह उसके लिये शहवत (काम वासना) को मारने वाली चीज़ है।

इस हदीस में नबी करीम स० ने रोज़ा रखने वाले की लालसा और पाक दामनी का एक साधन बताया है। क्योंकि शैतान आदम के पुत्रों के देह में खून की तरह दौड़ता रहता है और रोज़ा इन सोतों (रास्तों) को बन्द कर देता है और अल्लाह की महिमा और बड़ाई की याद दिलाता है। इस प्रकार इन्सान की शक्ति बढ़ती जाती है और शैतान की कुव्वत कमज़ोर हो जाती है। और मोमिन अल्लाह की अधिक इबादत करने लगता है और गुनाह कम से कम करता है।

रोज़े का एक फाइदा यह भी है कि शरीर को खराब और हानिकारक चीज़ों से पाक कर देता है और स्वास्थ्य को शक्ति व ताकत पहुंचाता है। इन फाइदों को तो बहुत से डाक्टरों ने भी स्वीकार किया और इसके द्वारा बहुत सी बीमारियों का उपचार भी किया है।

अल्लाह तआला ने अपनी प्यारी किताब (कुरआन मजीद) में सूचना दी है कि उसने हम पर रोज़ा फर्ज़ किया है जिस प्रकार पहली उम्मतों पर फर्ज़ किया था। साथ ही इस बात को भी बता दिया कि केवल रमज़ान का रोज़ा ही हम पर फर्ज़ किया गया है। और नबी करीम स० ने खबर दी है कि पांच अर्कान में से एक रूक्न है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना फर्ज़ किया गया जिस प्रकार तुम से पहले के लोगों पर फर्ज़ किया गया था, ताकि तुम अल्लाह से डरो। यह रोज़े गिन्ती के कुछ दिन हैं।

अल्लाह तआला ने यह भी फरमायाः

रमज़ान का महीना वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया, जो लोगों को हिदायत करने वाला है, और जिसमें हिदायत की ओर सत्य, असत्य की तमीज़ की निशानियां हैं। इसलिये तुम में से जो इस महीना को पाये उसे रोज़ा रखना चाहिये। जो बीमार हो, या मुसाफिर हो उसे दूसरे दिनों में यह गिनती पूरी करनी चाहिए। अल्लाह का इरादा तुम्हारे साथ आसानी है, सख्ती का नहीं। वह चाहता है कि तुम रोज़ों की गिन्ती पूरी कर लो, और अल्लाह की दी हुयी हिदायत पर उसकी बड़ाईयां बयान करो, और शुक्र अदा करो। (सूर बकरा-१८५)

और बुखारी व मुस्लिम में इब्ने उमर रजि० से रिवायत है कि नबी करीम स० ने फरमायाः

इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है। गवाही देना है कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद स० अल्लाह के रसूल हैं नमाज़ काइम करना ज़कात अदा करना, रमज़ान के महीने के रोज़े रखना और बैतुल्लाह का हज्जा करना।

रोज़ा एक बहुत बड़ा नेक अमल है। और सवाब भी उसका बहुत बड़ा है, विशेषकर रमज़ान का रोज़ा जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों पर फर्ज़ किया है और उसे अपने नज़दीक कामयाबी का एक साधन

बताया है। जैसा कि सहीह हदीस में साबित है कि नबी करीम स० ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है किः

इब्ने आदम रोज़ा का अलावा जो भी कर्म करता है उस पर उसे दस से लेकर सत्तर गुना तक का सवाब मिलता है, लेकिन चूंकि रोज़ा मेरे लिये है इसलिये मैं ही उसका बदला दूंगा, क्योंकि उसने मेरे ही लिये शहवत और खाना पीना तर्क किया था।

रोज़ादार के लिये दो खुशियां हैं। एक उस समय मिलती है जब वह इफतार करता है और दूसरी खुशी उस समय होगी जब वह अपने रब से मिलेगा। और अल्लाह के नज़दीक रोज़ादार के मुंह की बू मुश्क से भी बेहतर है।

एक सहीह हदीस में नबी करीम स० ने फरमायाः जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दर्वाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दर्वाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। और शैतान बन्दी बना दिये जाते हैं।

तिर्मिज़ी और इब्ने माजा की रिवायत में है कि नबी करीम स० अलैहि० ने फरमायाः

जब रमज़ान की पहली रात होती है तो शैतान और बागी जिन्न बन्दी बना दिये जाते हैं और जन्नत के दर्वाज़े खोल दिये जाते हैं, फिर एक दर्वाज़ा भी बन्द नहीं होता। और जहन्नम के दर्वाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और एक भी दर्वाज़ा नहीं खुलता है। और हर रात एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देता है कि हे भलाई चाहने वाले आगे बढ़ो, और हे बुराई चाहने वाले! अपने बुरे कामों से रूक जा। और अल्लाह बहुतों को तो जहन्नम की आग से मुक्त कर देता है।

उबादा बिन सामित रजि० से रिवायत है कि नबी करीम स० ने फरमायाः ''तुम पर शुभ महीना आ गया है। उसमें अल्लाह तआला तुम्हें ढांप लेता है, तुम पर अपनी रहमतें नाजिल करता है, तुम्हारे गुनाहों को माफ करता है, तुम्हारी दुआओं को स्वीकार करता है, भलाई की तरफ तुम्हारे बढ़ने को देखता है और अपने फरिश्तों के सामने तुम्हारा जिक्र करके गर्व करता है इसलिये तुम अपनी तरफ से अल्लाह को अच्छे कर्म दिखलाओ, क्योंकि सबसे बड़ा अभागा वह है जो इस महीने में अल्लाह की रहमत से वंचित हो गया। (तबरानी)

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस **मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

रमज़ान की खूबियां

रमज़ान का महीना दूसरों महीनों से इस लिये भी अफज़ल है कि इसी महीने में कुरआन को अवतरित (नाज़िल) किया गया था और दूसरे महीनों की अपेक्षा इस महीने की ज़्यादा खूबियां हैं। इन ही खूबियों के पेशे नज़र इस महीने में इबादत का सवाब भी ज़्यादा मिलता है और अधिकतर आसमानी किताबें इसी महीने में अवतारित की गयी हैं। अल्लाह ने अपने बन्दों का इतना ख्याल रखा है कि इस महीने में हमारा बन्दा ज़्यादा से ज़्यादा इबादत कर ले, इसी लिये शैतानों को जकड़ दिया जाता है, ताकि वह इबादत करने वाले बन्दों को बहला फुसला न सके। एक मौक़े पर मुहम्मद स० जब मिंबर पर चढ़े तो तीन बार आमीन कहाः फिर जब बाद में सहाबा ने पूछा तो आपने फरमाया कि मेरे पास जिब्रईल अलैहिस्सलाम आये थे उन्होंने कहा जो शख्स रमज़ान का महीना पाकर अपने गुनाह न माफ करवा सके तो उस पर अल्लाह की लानत हो तो मैंने भी आमीन कहा।

मुहम्मद स० ने फरमाया कि रमज़ान शुरू होते ही शैतानों और उजड जिन्नों को जकड़ दिया है, जहन्नम के दर्वाज़े बन्द कर दिये जाते हैं जन्नत के सारे दर्वाज़ों को खोल दिया जाता है। अल्लाह तआला की तरफ से एक फरिश्ता यह पुकारता है कि नेकियां कमाने वाले पहल करो, बुराइयों का इरदा करने वाले बुराइयों से दूर रहो।

इस महीने की फजीलत का अन्दाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अल्लाह ने इस महीने में एक ऐसी रात रखी है जिसको कुरआन में लैलतुलकद्र कहा गया है, इस रात के बारे में कुरआन कहता है कि लैलतुल कद्र हज़ार महीनों से ज़्यादा बेहतर है।

इस रात के बारे में मुहम्मद स० ने फरमाया है कि जो इस रात से वंचित (हुआ) तो समझो वह सारे (भलाई) से महरूम हो गया।

रिवायतों में आता है कि इस महीने में उमरा करने से हज के बराबर सवाब मिलता है।

रसूल स० ने एक अंसारी खातून से पूछा कि तुम ने हमारे साथ साथ हज क्यों नहीं किया तो उस अंसारी खातून ने कहा कि मेरे पास सवारी नहीं है। आप स० ने फरमाया रमज़ान के महीने में उमरा करने का सवाब मेरे साथ हज करने के बराबर है।

इस महीने की इबादतों की खूबी यह है कि रमज़ान की इबादतें क्यामत के दिन अल्लाह से सिफारिश करेंगी। रसूल स० ने फरमाया कुरआन और रोज़ा बन्दों के हक़ में सिफारिश करेंगे। रोज़ा कहेगा ऐ मेरे रब मैंने तुम्हारे इस बन्दे को खाने पीने से रोके रखा इसके हक़ में मेरी अनुशंसा (सिफारिश) को कुबूल कर ले। कुरआन कहेगा। ऐ मेरे रब मैंने इसे नींद से रोके रखा था, तू इसके बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले, इन दोनों (कुरआन और रोज़े) की सिफारिश कुबूल कर ली जाये गी।

रसूल स० ने फरमायाः रमज़ान

की इबादतों की वजह से अल्लाह तआला बन्दों को जन्नत का पात्र (मुस्तहिक) बना देता है। प्यारे रसूल मुहम्मद स० ने फरमायाः जो शख्स अल्लाह तआला और उसके संदेष्टा (रसूल) मुहम्मद स० पर ईमान रखता हो, नमाज़ काइम करता और रमज़ान के महीने के पूरे रोज़े रखता हो तो अल्लाह पर उसका अधिकार यह है कि उसको जन्नत में दाखिल कर दे।

मुहम्मद स० ने फरमाया जन्नत में एक दर्वाज़े का नाम रैयान है, इस दर्वाज़े से केवल रोज़ेदार प्रवेश करेंगे। उस दिन पुकारा जायेगा कि रोज़ेदार कहां हैं? रमज़ान के महीने के रोज़े रखने से अगले पिछले गुनाह माफ कर दिये जाते हैं। मुहम्मद स० ने फरमायाः जो ईमान की हालत में सवाब की नियत से रोज़ा रखेगा, उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जाते हैं।

जब रमज़ान का महीना आता था तो सहाब-ए-किराम इस महीने में इबादतों का एहतमाम करते थे, अल्लाह तआला हम लोगों को रमज़ान के महीने में ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करने की क्षमता (तौफीक़) दे ताकि हम रमज़ान की बर्कतों और उसकी खूबियों से महरूम वंचित न हों।

(संपादन प्रभाग)

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

शअ्बान महीने के अहकाम

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

शअ्बान महीने की फज़ीलत यह है कि इस महीने में बन्दों के आमाल अल्लाह के सामने पेश किये जाते हैं जैसा कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जितने रोज़े आप शअ्बान के महीने में रखते हैं मैंने इतने रोज़े किसी दूसरे महीने में रखते हुए नहीं देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रजब और रमज़ान के दर्मियान यह ऐसा महीना है जिससे लोग गफ़लत करते हैं यह ऐसा महीना है जिस में आमाल अल्लाह के पास पेश किये जाते हैं, मैं चाहता हूं, कि मेरा अमल इस हाल में पेश किया जाए कि मैं रोज़े से रहूं। (नेसई)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस महीने में ज़्यादा से ज़्यादा रोज़ा रखते थे जैसा कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैंः नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शअ्बान के महीने से ज़्यादा किसी अन्य महीने में रोज़ा नहीं रखते थे, आप पूरा शअ्बान रोज़ा रखते थे। (बुखारी)

शअ्बान की दर्मियानी रात में गुनाहों को मआफ करने से संबन्धित हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला आधे शअ्बान की रात (अपने बन्दों पर) नज़र फरमाता है फिर मुश्रिक और (मुसलमान भाई से) दुश्मनी रखने वाले के सिवा पूरी सृष्टि की बख्शिश फरमा देता है (इब्ने माजा) अल्लामा अल्बानी ने इस रिवायत को हसन कहा है।

शअ्बान में असलाफ के अमल के बारे में सलमा बिन कुहैल रह० फरमाते हैं कि शअ्बान के महीने को कारियों का महीना कहा जाता था'' जब शअ्बान का महीना शुरू होता तो हबीब बिन साबित रह० फरमाते ''यह कारियों का महीना है'' जब शअ्बान का महीना शुरू हो जाता तो उमर बिन क़ैस मलाई रह० अपनी दुकान बन्द कर देते और कुरआन करीम की तिलावत के लिये फारिग हो जाते। (लताइफुल मआरिफ)

अबू बक्र बलखी रह० फरमाया करते थेः रजब खेती का महीना है और शअ्बान खेती को सींचने और रमज़ान खेती काटने का'' यह फरमाते थे। ''रजब की मिसाल हवा की, शअ्बान की मिसाल बारिश जैसी है। जिसने रजब के महीने में जोता बोया नहीं और शअ्बान में खेती को सैराब नहीं किया तो वह रमज़ान में खेती काटने का खुवाब कैसे देख सकता है।'' यह हमारे असलाफ (पूर्वज) थे जो दीन की बारीकियों को समझते थे और इनके अनुसार अमल करते थे।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम छः महीना पहले दुआ करते कि अल्लाह उन्हें रमज़ान का महीना नसीब करे और रमज़ान में इबादत के बाद छः महीने तक इस इबादत के कुबूल हो जाने के लिये दुआ करते थे। यहया बिन कसीर रह० बयान करते थे कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम यह दुआ करते थे ऐ अल्लाह मुझे रमज़ान के हवाले कर दे, मेरे लिये इसे सलामती वाला बना दे और

इसमें (किये गये आमाल) को मुझ से क़ुबूल फरमा ले।'' वह यह दुआ इस लिये करते थे क्योंकि रमज़ान तक जीवित रहने की क्या गारन्टी है और इस बात की क्या ज़मानत है कि जब रमज़ान आए गा तो सेहत व तन्दुरूस्ती बाकी रहेगी।

बाज़ लोग सख्त गर्मी के मौसम में रोज़ा छोड़ देते हैं और तरह-तरह के हीले बहाने ढूंढ़ने लगते हैं जबकि सख्त गर्मी में रोज़ा रखने का सवाब ज़्यादा मिलता है जैसा कि हदीस शरीफ में है कि जब हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मौत का वक़्त करीब आया तो उन्हें इस बात का बड़ा दुख था कि सख्त गर्मी वाले रोज़े नसीब नहीं होंगे। हज़रत अबू बक्र सिददीक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि वह गर्मी में रोज़े रखते और सर्दी के मौसम में बगैर रोज़े के रहते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने बेटे अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को मौत के वक़्त वसियत फरमाई की कि वह सख्त गर्मी में ज़रूर रोज़ा रखें। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा भी सख्त गर्मी के दिनों में रोज़े रखती थीं।

१५शअ्बान को खास करके रोज़े रखने की कोई दलील नहीं (मजमूउल फतावा १०/३/३८५)

१५वीं शअ्बान की रात को महफिल आयोजित करने के बारे में शैख इब्ने बाज़ रह० फरमाते हैं कि १५ शअबान को महफिल जमाना, इस दिन रोज़ा रखना कुछ लोगों की तरफ से विदअत (दीन में नई बातों) में से है। इसकी कोई ऐसी दलील नहीं है जिस पर विश्वास किया जा सके। इसकी फज़ीलत के बारे में बाज जईफ हदीसें हैं जिन पर विश्वास कर जायज़ नहीं। (मजमूउल फतावा १/१८६)

शैख इब्ने बाज़ रह० ने यह भी फरमाया कि १५वीं शअबान की रात को नमाज़ वगैरह का एहतमाम करना और इसके दिन को रोज़ा के लिये खास करना अधिकांश ओलमा के नज़दीक बदतरीन बिदअत है इसकी शरीअत में कोई बुनियाद नहीं है बल्की सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के ज़माने के बाद इसका वजूद अमल में आया। (मजमूउल फतावा १/१९१)

अल्लामा इब्ने उसैमीन रह० फरमाते हैंः सहीह बात यही है कि १५वें शअ्बान का रोज़ा या खास तौर पर इस दिन तिलावत या जिक्र व अज़कार करना, शरीअत में इस की कोई असल व बुनियाद नहीं है १५वें शअ्बान का दिन दूसरे महीनों के दिनों के ही समान है। (मजमूउल फतावा २०-२३)

अल्लामा उसैमीन रह० फरमाते हैंः १५वें शअ्बान को खुसूसियत के साथ रोज़ा रखना सुन्नत नहीं है और जब सुन्नत नहीं है तो हर हाल में बिदअत है क्योंकि रोज़ा एक इबादत है और जब शरीअत से इबादत की बात साबित न हो तो हर हाल में बिदअत (दीन में नई बात) होगी। (मजमूउल फतावा २०-२६)

१५वें शअ्बान में साल भर की रोज़ी और आमाल की तक़दीर लिखे जाने के बारे में अल्लामा इब्ने उसैमीन रह० फरमाते हैं कि यह झूठ है बल्कि यह सब लैलतुल कद्र में होता है। (मजमूउल फतावा २०-३०)

अल्लामा उसैमीन रह० फरमाते हैं कि बाज लोग १५वें शअ्बान के दिन खाना बना कर फकीरों, मोहताजों में बांटते हैं और इसे मां बाप के शाम के खाने का नाम देते हैं। इस का नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई सुबूत नहीं है इस लिये इस दिन को इन आमाल के लिये खास करना बिदआत में से है।

(मजमूउल फतावा २०-३१)

दुनिया की हक़ीक़त

इब्ने यासीन

आज मानव समाज दुनिया के माया जाल में जिस तरह उलझा है, उसको देखकर लगता है कि आज का मानव इस दुनिया को सदैव बाकी रहने वाला और अपने को इसमें हमेशा जीवित रहने वाला समझ बैठा है। लेकिन इससे बड़ा धोका कुछ और नहीं हो सकता, क्योंकि हर आदमी अपनी आंखों से प्रतिदिन कितनों के जनाज़े को उठता देखता है और उसको यह भी विश्वास होता है कि एक न एक दिन वह भी इस दुनिया को अलविदा कह देगा। इससे तो यह बात स्पष्ट हो गई कि आदमी इस संसार में हमेशा नहीं रहेगा, और इसी प्रकार इस दुनिया का भी अन्त हो जायेगा लेकिन फिर भी लोग फना हो जाने वाली दुनिया के पीछे जिस तेज़ी से भाग रहे हैं और उसको पाने के लिए जितने जतन कर रहे हैं अगर उसका एक हिस्सा भी वास्तविक जीवन (आखिरत) के लिए करते तो यह उनके लिए अच्छा होता।

सत्य यह है कि यह दुनिया और इसकी सारी चीज़ें फना होने वाली हैं। हमें यहां आज़माइश और इम्तेहान के लिए भेजा गया है लेकिन हम इसी दुनिया को सबकुछ समझ बैठे और आखिरत को भुला बैठे जो कि सबसे बड़ा धोखा है। जैसा कि कुरआन कहता है कि दुनियावी जिन्दगी धोखा है और फिर इसकी वास्तविकता का वर्णन करते हुए कहता है।

''दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशा है। हक़ीक़ी ज़िन्दगी तो आखिरत की ज़िन्दगी है। काश कि यह लोग जान लेते''।

दुनिया की असल हक़ीक़त को स्पष्ट करते हुए नबी स०अ०व० के इस कथन को हज़रत जाबिर रज़ि० रिवायत करते हैं।

अल्लाह के रसूल कान कटे, मुर्दा बकरी के बच्चे के पास से गुज़रे और कहाः तुममें से कौन इसे एक दिरहम में लेना पसन्द करेगा? सहाबा ने कहा हम तो उसे बिला दाम के भी लेना पसन्द नहीं करेंगे। आप स०अ०व० ने कहाः अल्लाह की कसम! तुम्हारे नज़दीक जितना अधिक यह बे हक़ीक़त और कमतर है, अल्लाह के यहां दुनिया इससे भी अधिक बेहक़ीक़त और कमतर है'' नबी स०अ०व० ने फरमायाः

''खबरदार! यह दुनिया और उसका साज़ व सामान सब धुतकारा हुआ है, सेवाये अल्लाह के ज़िक्र और अल्लाह से करीब करने वाली चीज़ें और आलिम और विद्यार्थी के।''

कुछ लोग दुनिया को पाने के लिये बड़े लालसी और उत्सुक होते हैं, फिर यह लोग हराम, एवं हलाल और वैध एवं अवैध के बीच फ़र्क़ नहीं करते और इस प्रकार अपनी आखिरत बर्बाद कर लेते हैं। परन्तु जो व्यक्ति आखिरत का इच्छुक होता है वह आखिरत के लिए चिन्तित रहता है और उसके लिए तैयारी करता रहता है। और दुनिया के धोखे में नहीं आता। आमतौर पर लोग दुनियावी सुख, चैन को पाने के लिए अपनी पूरी शक्ति खर्च कर देते हैं, हालांकि दुनिया की ज़िन्दगी जैसी भी हो गुज़र जायेगी। लेकिन आखिरत की ज़िन्दगी हमेशा हमेशा रहने वाली है। इसीलिए नबी स० अ०व० ने कभी भी इस दुनिया से अपना दिल नहीं लगाया। तिर्मिज़ी में है एक बार आप स०अ०व० चटाई पर आराम कर रहे थे। जब आप उठे तो आपके

शरीर पर चटाई के निशानात और चिन्ह थे, इब्ने मसऊद रज़ि० ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल आप हमें आज्ञा देते तो आप के लिए नर्म बिस्तर तैयार करके बिछा देते आपने उत्तर दिया मेरा दुनिया से क्या सम्बन्ध ा मेरा और दुनिया का सम्बन्ध सिर्फ इतना है कि जैसे कोई मुसाफिर यात्रा करते हुए किसी पेड़ के नीचे छाया लेने के लिए बैठ जाये, आराम करे और कुछ देर के बाद उसे छोड़कर अपने पथ पर चल पड़े। आप स०अ०व० ने दुनिया की असल हक़ीक़त का वर्णन करते हुए कहाः अल्लाह की कसम! दुनिया आखिरत के मुकाबले में ऐसे है जैसे एक आदमी समुन्दर में उंगली डाले फिर देखे उसमें कितना पानी लगता है। (सहीह मुस्लिम)

इस्लाम ने दुनिया की असल हक़ीक़त को स्पष्ट करने के बाद यहां जीवन व्यतीत करने का ढंग भी बतला दिया है। तुम दुनिया में यूं रहो जैसे कोई परदेसी या मुसाफिर।

परदेसी तो कहीं न कहीं ठहर ही जाता है लेकिन एक मुसाफिर के सामने रास्ता तय करने के सिवा कोई उददेश्य नहीं होता। उस पर केवल यह धुन सवार होती है कि सफर तय करके शीघ्र से शीघ्र अपनी मंज़िल तक पहुंच जाये। इसी प्रकार इस्लाम के अनुयाई को चाहिए कि अपने असल उददेश्य से मतलब रखे और वास्तविक सफलता को कभी भी अपनी नज़रों से ओझल न होने दे। अगर वह इस दुनिया में उलझ गया तो मंज़िल तक नहीं पहुंच सकता। एक मोमिन के नज़दीक यह दुनिया दिल लगाने की जगह नहीं। उसका असल ध्यान और असली ठिकाना जन्नत की तरफ होना चाहिए।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

व्यापार

प्रोफेसर डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी

व्यापार को इस्लामी जीवन-व्यवस्था में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, क्योंकि इसे अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी माना जाता है।

एक सहीह हदीस में आया है-

''सबसे उत्तम जीविका वह है जो मनुष्य स्वयं अपनी कमाई से प्राप्त करे''। (मुस्नद अहमद, ६:४२)

और दूसरी ओर उन लोगों की कठोर निन्दा की गई है, जो भीख मांगकर अपनी जीविका प्राप्त करते हैं, चाहे वे सड़कों पर भीख मांगने वाले हों या मज़ारों के मुजाविर हों, और अपने आपको इस धोके में रखते हों कि हम तो अल्लाह पर तवक्कुल करने वाले हैं। ऐसे लोग क़ियामत के दिन अपने चेहरों को इस प्रकार नोचेंगे कि उनमें से सारा मांस निकल जाएगा।

लेकिन इसी के साथ इस्लामी शिक्षाओं में इस बात की भी ताकीद की गई है कि मनुष्य को चाहिए कि वह सहीह मार्ग से धन कमाए और ग़लत मार्ग को न अपनाए, बल्कि यह विश्वास भी रखे कि जो उसके भाग्य में लिखा हुआ है वह मिलकर रहेगा। (देखिएः इबने-माजा २१४२ तथा हाकिम २:३)

क्योंकि इस्लामी व्यापार के मूल सिद्धान्तों में से एक यह भी है कि पैसा कैसे कमाया जाए, और कहां खर्च किया जाए। अर्थात कमाई का साधन भी सही हो, जो निर्धारित किए गए नियमानुसार हो, अगर ऐसा नहीं है तो वह व्यापार हराम कहलाएगा। इसी प्रकार एक मुसलमान का परम कर्तव्य है कि वह धन को सही स्थान पर खर्च करे, जो इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार हो। अगर ऐसा नहीं किया तो प्रलय के दिन उसको ख़र्च का भी हिसाब देना पड़ेगा।

यूं तो इस्लाम ने निश्चित रूप से हर प्रकार के व्यापार को जायज़ बताया है। परन्तु कुछ ऐसे भी व्यापार हैं जिनको उसने हराम बताया है, क्योंकि वे मानव-समाज के लिए हानिकारक हैं। इन हानिकारक व्यापारों को दो भागों में बांटा जा सकता है-

१. एक वे व्यापार जो व्याज के सिद्धान्तों पर किए जाएं। इस प्रकार के व्यापार इस्लाम धर्म में हराम हैं। चाहे वह किसी भी प्रकार से किए जाएं। इसी लिए तो इस्लाम विरोधियों ने कहा था।

वे कहते हैं कि व्यापार भी तो ब्याज ही जैसा है। जबकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल ठहराया है और ब्याज को हराम (कुरआन, सूरा-२, अल-बकरा, आयत-२७५)

२. दूसरे वे व्यापार जिनसे समाज को हानि होती हो। इस प्रकार के व्यापार भी इस्लाम में बिल्कुल हराम हैं।

वास्तव में अरब के विधर्मी हर

प्रकार के व्यापार को जायज़ समझते थे, चाहे उससे समाज में कितना ही बिगाड़ पैदा हो। उनको केवल अपनी भलाई चाहिए थी, समाज की नहीं। व्यापार के विषय में इस्लामी शिक्षाओं के विशेषज्ञों का विचार है कि आर्थिक व्यवस्था पर ही समाज की स्थापना होती है। इसलिए हर वह व्यापार जो समाज के लिए हानिकारक हो, हराम है। जैसे ब्याज, जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है। (अधिक जानकारी के लिए देखिए 'ब्याज')

वे व्यापार जिनको इसलाम ने हराम बताया है, उनका वर्णन यहाँ संक्षेप में किया जा रहा है-

१. नाप-तौल में कमी करनाः प्राचीनकाल से नाप-तौल में कमी करने की आदत चली आ रही थी। अरबों में भी यह रोग लग गया था। कुरआन ऐसे लोगों की निन्दा करते हुए उस दिन से डराता है जब मनुष्य अपने रब के सामने हिसाब देने के लिए खड़ा होगा। कुरआन में है-

''तबाही है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए, जो नापकर लोगो से तो पूरा लेते हैं, परन्तु जब उन्हें नाप कर या तौलकर देते हैं तो घटा देते हैं, क्या ये लोग समझते नहीं कि उन्हें दोबारा उठाया जाएगा? एक बड़े दिन के लिए, जिस दिन लोग सारे संसार के रब के सम्मुख अपने कर्मों का हिसाब देने के लिए खड़े होंगे।'' (सूरा-८३, अत-मुतफ़्फ़ीफ़ीन, आयतें१-६)

२. प्रत्येक वह व्यापार हराम है जिसमें धोखा हो। एक सहीह हदीस में आता है कि नबी स० ने धोखे वाले व्यापार से मना किया। (देखिएः मुस्लिम, १५१३)

यह हदीस व्यापार के सिद्धान्तों को निश्चित करती है। बस जिस व्यापार में भी धोखे का कोई पहलू पाया जाएगा वह इस्लामी शिक्षानुसार हराम होगा जैसे फल की टोकरी में ऊपर अच्छे फल रख दिए जाएं और नीचे खराब, ऊपर अच्छा अनाज रख दिया जाए नीचे खराब। ऐसा व्यापार जिसमें खरीदी जाने वाली वस्तु मजहूल हो अर्थात उसके परिमाण का सही पता न हो, गिनती वाली है तो सही गिनती का पता न हो इसी प्रकार ऐसी वस्तु का व्यापार करना जो अब तक तैयार न हो, या जिसको तुरन्त खरीदने वाले के हवाले करना असम्भव हो, इत्यादि ये सब व्यापार हराम है क्योंकि इनमें धोखा पाया जाता है। बेचने वाला जो वस्तु दे रहा है, खरीदने वाला उसको सही नहीं समझ रहा है। बेचने और खरीदने वाले जब तक किसी वस्तु पर पूरी तरह सहमत नहीं हो जाते, उस समय तक वह धोखे वाला व्यापार होगा और जब सहमत हो जाएं तो फिर सही व्यापार होगा।

३. व्यापार में कोई ऐसी शर्त न लगाई जाए जिससे व्यापार का उद्देश्य ही समाप्त हो जाए। अगर किसी ने ऐसी शर्त लगाई तो व्यापार सही होगा, परन्तु वह शर्त लागू नहीं होगी। जैसे ज़मीन बेचने वाला ज़मीन लेने वाले पर यह शर्त लगा दे कि इस ज़मीन पर कोई मकान नहीं बनाया जा सकता या विवाह के समय यह शर्त लगा दी जाए कि दो बच्चों से अधिक बच्चे पैदा नहीं होने चाहिए। इस तरह की बातों में मामला ठीक होगा परन्तु शर्त ठीक

न होगी। एक सहीह हदीस में आया है-

''हर वह शर्त जो अल्लाह की किताब में नहीं है, मिथ्या है, चाहे वह सौ शर्तें क्यों न लगा ले।'' (देखिए बुखारी, ४५६ तथा मुस्लिम, १५०४)

४. अगर कोई व्यक्ति कोई वस्तु ख़रीद रहा है तो किसी दूसरे के लिए जायज़ नहीं कि वह भी उसे खरीदने लगे जब तक पहला व्यक्ति उसको छोड़ न दे। (देखिए:बुखारी, २१३६ तथा मुस्लिम, १४१३)

कुछ उन चीज़ों का वर्णन जिन का व्यापार वर्जित (हराम) है।

१. मदिरा, मरा हुआ जानवर, सूअर तथा बुतों का व्यापार। (देखिए: बुखारी, २२३६ तथा मुस्लिम, १५८१) मरे हुए जानवर के चमड़े का व्यापार उचित है, जब उसको पक्का (दबाग़त) कर लिया जाए। (देखिए: बुखारी, ५५३१)

२. कुत्ते तथा रक्त का व्यापार (देखिए:बुखारी, २२३८)

३. व्यभिचार तथा पूजा-पाठ की कमाई हराम है। (देखिए: बुखारी, २२८२ तथा मुस्लिम, १५६७)

४. किसी स्वतंत्र व्यक्ति को बेचना हराम है एक सहीह हदीस में आया है-

''अल्लाह का कहना है कि तीन प्रकार के लोगों का मैं प्रलय के दिन शत्रु बनूंगा-एक वह जिसने मेरे नाम से कोई समझौता किया, फिर तोड़ दिया, दूसरा वह जिसने किसी स्वतंत्र व्यक्ति को पकड़कर बेच दिया और उसका मूल्य खाया, तीसरा वह जिसने मजदूर से तो पूरा काम लिया परन्तु उसकी मज़दूरी नहीं दी।'' (देखिए: बुखारी, २२२७)

५. वह पानी जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो, उसका बेचना हराम है। (देखिए: बुखारी, २३५४ तथा मुस्लिम, १५६६)

६. साँड का वीर्य बेचना हराम है। ७. फल को पेड़ पर कच्चा ही बेच देना हराम है। (देखिए: बुखारी, २३८१ तथा मुस्लिम १५३६)

एक दूसरी हदीस में उसको 'काला' कहा गया है। अर्थात फल जब तक न बेचा जाए जब तक वह काला न हो जाए।

चूंकि अरब में अधिकतर व्यापार खजूर के फलों का होता था इसलिए 'काला' कहा गया है, क्योंकि जब खजूर काला होने लगता है तो फिर वह हवाओं या वर्षा से गिरता नहीं।

इसके अतिरिक्त और भी ऐसे व्यापार हैं जिनको इस्लाम में हराम बताया गया है क्योंकि वह मानव-समाज के लिए हानिकारक हैं, परन्तु संक्षेप के कारण यहाँ केवल उन महत्वपूर्ण व्यापारों का वर्णन किया गया हे, जो हराम हैं। बाक़ी वह व्यापार जो खरीदने और बेचने वाले के बीच परस्पर सहमति से होगा, जायज़ माना जाएगा जैसा कि पवित्र कुरआन में आया है-

ऐ ईमान वालो, परस्पर एक-दूसरे के धन को अवैध रूप से न खाओ, सिवाय इसके कि तुम्हारा आपस में सहमति से सौदा हो जाए'' (सूरो-४, अन-निसा, आयत-२९)

यह इस्लामी व्यापार के सिद्धान्तों में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इसलिए हर वह व्यापार हराम होगा जिसमें बेचने और खरीदने वाले आपस में सहमत न हों।

विवाह की प्रेरणा

डा० मुक़्तदा हसन अज़हरी रह०

कुरआन करीम की निम्नलिखित आयतों में निकाह का आदेश मौजूद है।

१. अनुवाद-''जो महिलायें तुमको भली लगें उनसे विवाह कर लो, दो-दो तीन-तीन, चार-चार।'' (अन्निसा आयत-३)

२. अनुवाद- ''तथा जो तुम में बिना पति की स्त्रियां हैं उनका विवाह कर दो, तथा तुम्हारी दासियों या दासों में जो विवाह योग्य हों उनका भी। यदि यह निर्धन होंगे तो अल्लाह तआला अपनी कृपा से उन्हें मालदार कर देगा, अल्लाह गुंजाइश वाला (सब) जानता है। (सूरः नूर आयत-३२)

३. बुखारी शरीफ में हज़रत अनस बिन मालिक से वर्णित है कि तीन सहाबी (वे लोग जो हज़रत मुहम्मद स० के समय में उनके साथ ईमान की हालत में रहे और ईमान की हालत में निधन हुआ उन्हें सहाबी कहा जाता है) उम्महातुल मोमिनीन के पास गये तथा नबी स० के इबादत (उपासना) के विषय में पूछा, जब उन्हें विस्तार पूर्वक बताया गया तो वे लोग कहने लगे कि हमारी योग्यता नबी स० से बहुत कम है। आप स० के सभी गुनाहों को क्षमा कर दिया गया है। अतः हमें अधिक इबादत की आवश्यकता है। उनमें से एक सहाबी ने कहा कि मैं सदैव व्रत रखूंगा, दूसरे ने कहा कि मैं सदैव रात भर नमाज़ पढूंगा तथा तीसरे ने कहा कि मैं विवाह नहीं करूंगा।

इस अवसर पर नबी स० पधारे और कहा कि तुम लोगों ने जो भी कहा मुझे मालूम है, मैं तुमसे अधिक, खुदा से डरता हूं तथा साथ ही रोज़ा भी रखता हूं, और इफतार (ब्रत तोड़ना) भी करता हूं। नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं। विवाह भी करता हूं। जो मेरे आदर्श को छोड़ेगा उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।

४. विवाह की प्रेरणा के सम्बन्ध में नबी स० का कथन है कि ऐसी स्त्रियों से विवाह करो जिससे अधिक सन्तान पैदा हो तथा जो प्रेम करने वाली हों क्योंकि मैं अन्य जातियों की अपेक्षा तुम्हारी बाहुल्यता पर गर्व करूंगा।

इस हदीस में मनुष्य की भलाई एवं हित के महत्वपूर्ण मुददों की ओर संकेत किया गया है, क्योंकि पति-पत्नी के आपसी प्रेम तथा सहयोग से घरेलू हितों की पूर्णता होती है तथा अधिक सन्तानों से नागरिक एवं धार्मिक कार्य विकसित होता है। इसी कारण रूसले अकरम स० ने अपने आदेशों में दोनों कार्यों की चर्चा की है। (हुज्जतुल लाहिल बालिग़ा)

इन शिक्षाओं के आधार पर

सभी इस्लामी विद्वानों का विचार है कि विवाह सुन्नते मुवक्किदा (वह कार्य जिसे नबी स० तथा सहाबा रज़ि० ने किया) है तथा कुछ विद्वानों ने इसे अनिवार्य माना है। यदि किसी के पास विवाह के आवश्यक साधन उपस्थित हों तथा उसे अकेलेपन में किसी बुराई या कष्ट का भय हो तो ऐसे व्यक्ति के लिये विवाह अनिवार्य है। यदि आवश्यक साधन न हों तो फिर वह रोज़ा (ब्रत) रख कर अपने शरीर तथा कामुकता को नियंत्रित करे।

विवाह के लिये आवश्यक बातेंः

चूंकि इस्लाम की दृष्टि में विवाह सम्बन्ध एक महत्वपूर्ण तथा सम्मानित सम्बन्ध है इसलिये उसने कुछ विशेष तथ्यों को विस्तार पूर्वक बताया है।

मंगनी की रस्म

विवाह में सबसे प्रथम चरण मंगनी का है। इस चरण में पुरूष किसी स्त्री के साथ विवाह की इच्छा व्यक्त करता है तथा स्त्री एवं उसके अभिभावक से उसकी अनुमति मांगता है, जब दोनों पक्ष सहमत हो जाते हैं तो फिर विवाह का कार्यक्रम आरम्भ होता है।

इस्लाम ने इस चरण के लिये जो आदेश दिये हैं उनमें सादगी के साथ-साथ ऐसे कार्यों को भी प्राथमिकता दी गई है, जिससे वैवाहिक जीवन को मंगलमय बनाने में सहायता मिलती है। मंगनी का उददेश्य यह है कि पुरूष तथा महिला में से प्रत्येक को एक दूसरे की स्थिति की जानकारी हो जाये, तथा उसके बाद यह निर्णय करें कि उनका एक साथ रहना सम्भव है कि नहीं? इसी कारण इस्लाम ने बताया है कि पुरूष अपनी मंगेतर अर्थात अपनी होने वाली पत्नी को देख ले ताकि बाद में बिगाड़ की सम्भावना कम रहे, परन्तु मंगेतर से एकान्त में मिलना उचित नहीं है।

अबूदाऊद के एक वर्णन में रसूल अकरम स० का कथन है कि जब तुम किसी स्त्री के लिए विवाह का सन्देश भेजो तो यदि सम्भव हो तो उसे अवश्य देख लो।

त्रिमिज़ी तथा निसाई के एक वर्णन में यह स्पष्ट किया गया है कि स्त्री को देख लेने के पश्चात विवाह करने से आपसी प्रेम तथा सौहार्द उत्पन्न होता है तथा वैवाहिक जीवन में अप्रिय घटना होने की सम्भावना नहीं होती।

मंगनी के विषय में एक बात का ध्यान आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ विवाह की बात कर रहा हो तो दूसरे व्यक्ति को उससे विवाह की बात करना मना है। यदि प्रथम व्यक्ति किसी कारणवश बात समाप्त कर दे तथा यह पता चल जाये कि इसे यह सम्बन्ध स्वीकार नहीं है तो दूसरा व्यक्ति अपनी बात प्रारम्भ करे। इब्ने उमर रज़ि० का कथन है कि नबी स० ने मंगनी पर मंगनी से मना किया है।

मंगनी का चरण पूरा हो जाने पर अभिभावक की अनुमति से दो गवाहों की उपस्थिति में महर निश्चित करके विवाह करे। इस प्रकार पुरूष तथा स्त्री धार्मिक रूप से परिणय सूत्र शादी के बंधन में बंध जायेंगे।

❑❑❑

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के शासन काल में अकाल पड़ गया था

१८ हिजरी में अरब में भीषण अकाल पड़ गया था, लोग खाने के लिये तरस गये। भूख और खूराक के अभाव की यह स्थिति थी कि दरिन्दे भाग भाग कर इन्सानों के पास पनाह लेते थे, आदमी बकरी जबह करता था लेकिन उसको खा नहीं पाता था क्योंकि वह खाने के लायक (योग्य) नहीं रहती थी। सूखा की वजह से बहुत से जानवर भूख से मर गये जिस साल यह अकाल पड़ा था उस साल का नाम इस्लामी इतिहास में ''आमुलरिमादा'' के नाम से मश्हूर है वजह यह है कि हवा मिटटी और धूल को राख की तरह खूब उड़ाती थी, एक लुकमा खाना मुश्किल हो गया था लोग देहातों से भाग भाग कर शहरों में जा रहे थे या शहर से करीब बस रहे थे। इतने महान संकट से छुटकारा पाने के लिये लोग अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तरफ से किसी समाधान की आशा लगाये बैठे थे जब कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इस संकट के भयावह परिणाम से खूब आगाह थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस संकट से उबरने के लिये जो कदम उठाये उसे यहां पेश किया जा रहा है। इस कहतसाली (अकाल) के मौके पर इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रजियल्लाहो तआला अन्हो के पास उनके खाने के लिये रोटी में घी लगा लायी गयी, आप ने एक देहाती को बुलाया ताकि वह भी आप के साथ खाना ख ले। देहाती घी पलेट के एक तरफ करके बड़े चाव से खाने लगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा कि ऐसा लगता है कि तुम को कभी घी खाने को न ही मिलता है? देहाती ने जवाब दिया अमुक वक़्त से आज तक मैंने घी और रोगन नहीं चखा और नहीं यह किसी को खाते हुये देखा है। इस देहाती की बात सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कसम खा ली कि जब तक मेरी प्रजा को खान पान के लिये सुख नसीब न हो जाये उस वक्त तक वह गोश्त और घी को हाथ भी नहीं लगायें गे। इस वाक्ये को बयान करने वाले इस बात पर मुत्तफिक़ (एकमत) हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस कसम को पूरा करने का संकल्प ले लिया और यही वजह है कि जब बाज़ार में घी और दूध ा से भरे डब्बे बिकने के लिये आये तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के गुलाम ने आपके लिये चालिस दिरहम में एक डब्बा घी और एक डब्बा दूध खरीद लिया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास पहुंच गया और कहाः ऐ अमीरूल मोमिनीन अल्लाह ने आप की क़सम को पूरा कर दिया और आप को इस का सवाब मिलेगा, अब बाज़ार में दूध और घी के डब्बे आ गये हैं और इन्हें चालीस दिरहम ने खरीद लिया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला

अन्हो में जवाब दिया तुम ने घी और दूध मंहगा खरीद लिया, इन दोनों चीज़ों को अल्लाह की राह में सदक़ा कर दो, मैं यह नापसन्द करता हूं कि फुजूल खर्ची का लुक़मा खाऊं और इसके बाद फरमाया जब तक मैं प्रजा जैसी हालत से नहीं गुजरूंगा मैं प्रजा के दुख दर्द को कैसे समझ सकूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की जुबान से निकला हुआ यह वाक्य पूरी मानवता के लिये और सियासत के भव्य सिद्धांतों में से एक सिद्धांत है।

हज़रत उमर इस अकाल से इतने प्रभावित हुये कि आप के शरीर का रंग बदल गया था, अयाज़ बिन खलीफा बयान करते हैं कि ''आमुल रिमाद'' अकाल के मौके पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का शरीर काला पड़ गया था, जब कि आप अरबी थे। (अरब के रहने वाले थे) घी और दूध खाते थे लेकिन जब लोग अकाल की चपेट में आये तो आप ने घी और दूध को खाना छोड़ दिया और तेल खाने लगे, यहां तक कि आप के शरीर का रंग काला पड़ गया। (उमर बिन ख़त्ताब शख़्सियत और कारनमे'' से अनुवाद)

रमज़ानुल मुबारक के मौके पर अपने

सदक़ात व खैरात का हिस्सा मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को देना न भूलें

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हिन्दुस्तान में अहले हदीसों का नुमाइन्दा पलेटफार्म है जो अपने उददेशों व लक्ष्यों की रोशनी में योजनाओं और संकल्पों को पूरा करने के लिये प्रयासरत है। उसकी दावती, तबलीगी, तालीमी, तर्बियती, तहरीरी व सहाफती, कल्याणकारी एवं समाजी सेवाओं का एक लम्बा सिलसिला है। सेमीनार कांफ्रेन्स और प्रतियोगिता के आयोजन, विभिन्न भाषाओं में पत्रिकाओं का प्रकाशन, तफसीर, हदीस और अहम दीनी किताबों के प्रसारण का काम पाबन्दी से हो रहा है अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल और अहले हदीस मंज़िल स्थिति जामा मस्जिद दिल्ली की चौथी मंज़िल की छत की ढलाई का काम हुआ चाहता है जिस की वजह से जमीअत के खर्च बढ़ गये हैं और यह सब काम अल्लाह के फज्ल व करम के बाद अहले खैर हज़रात, शुभचिंतकों और उपकारकों के सहयोग से हो रहा है। इस पर हम अल्लाह के शुक्रगुज़ार हैं और अपने उपकारकों और मुख्लिसीन के भी जिन्होंने किसी न किसी पहलू से मर्कज़ी जमीअत के निमार्ण एवं विकास में भाग लिया है और उसके योजनाओं को पूरा करने में आज भी सहयोग जारी रखे हुये हैं। रमज़ान का महीना शुरू होने वाला है इस मुबारक अवसर पर तमाम शुभचिंतकों व मुख्लिसीन से अपील है कि मर्कज़ी जमीअत के तमाम विभागों को सक्रिय रखने और उसके निमार्ण कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये जमीअत के जिम्मेदारों और कार्यकर्ताओं के साथ भरपूर सहयोग करें। वह आपकी सेवा में हाज़िर होंगे। अगर इनमें से कोई आपके पास न पहुंच सके तो कृपया अपना सहयोग राशि मर्कज़ी जमीअत के दफतर में भेज दें अल्लाह आपकी नेकियों को कुबूल करे।

चेक या ड्राफ केवलः**Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind**
के नाम से बनवायें :**A/c No.629201058685**

(ICICI Bank) Chandni Chowk, Branch

(RTGS/NEFT/IFSC CODE: ICIC0006292)

अपीलः- सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द